भगत कबीर – सबद ३३

ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२९

ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥
किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥१॥
कहु रे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥
बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥
सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥
सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥२॥
कहु कबीर जानैगा सोइ ॥
हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥३॥२९॥

सार: जो आकर्षण हमारी समझ को अपनी ओर खींचते हैं, जिज्ञासु विवेक, उनसे आगे देखता है। अस्तित्व के अनगिनत रूपों में खोए रहने के बजाय, वह सवाल करता है कि वह क्या गहरा स्रोत है जिससे पैदा होते और जाने जाते हैं। यह खोज धीरे-धीरे उस चेतना की ओर मुड़ती है जो हर समझ, अंतर और अनुभव को संभव बनाती है। जैसे-जैसे जागरूकता गहन होती है, अनेकता को अलगाव के तौर पर नहीं बल्कि एकत्व के अलग-अलग रूपों के तौर पर देखा जाता है। इसलिए, हमारे मूल की खोज, स्वयं को जानने से अलग नहीं होती। सभी रूपों के पीछे मौजूद उस एक सत्ता को पहचानकर, मन भौतिक दुनिया के आकर्षण से हटकर वास्तविकता के सार को समझने की ओर बढ़ता है।

ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥
आसमान में दिखने वाले तारों के समान। यह प्रतीक है कि रूपों की अनेकता हमें तब तक मोहित करती है जब तक हमारा मन उस एकत्व को पहचानना नहीं सीख जाता जिसके यह सब रूप अभिव्यक्ति हैं।

किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥१॥
उन तारों के पीछे कौन है जो उन्हें बनाता और कौन पूरी सृष्टि को प्रेरित करता है। यह सवाल उत्पत्ति के मूल तत्व की गहराई में जाता है और उस चेतना की ओर मुड़ता है जो हर तरह की अनुभूति को संभव बनाती है। (१)

कहु रे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥
हे पंडित, मुझे बताओ कि आकाश किस चीज़ से जुड़ा है। यह सवाल बुद्धि को उस अदृश्य आधार का आभास करने के लिए प्रेरित करता है जो अस्तित्व को बनाए रखता है।

बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥
जो इसे समझता है, वही सौभाग्यशाली है। इसका अर्थ है कि जब विवेक में विनम्रता, समझ और अनुभव-आधारित खोज का समावेश होता है, वह सौभाग्यशाली हो जाता है। (१)(विराम)

सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥
सूरज और चाँद रोशनी देते हैं। यह प्रतीक है कि ज्ञान, अनुभव और विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोण हमारे जीवन को प्रकाशित करने के मार्ग दिखा सकते हैं लेकिन वह स्वयं हमें उन अंतर्निहित घटनाओं या वास्तविकताओं का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं करा सकते।

सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥२॥
सभी के भीतर वह सर्वव्यापी शक्ति व्याप्त है। यह दृष्टिकोण उस विचार का समर्थन करता है कि हमारी आंतरिक अनुभूतियाँ और बाहरी संसार दोनों एक ही सार्वभौमिक स्रोत की अभिव्यक्तियाँ हैं। (२)

कहु कबीर जानैगा सोइ ॥

कबीर कहते हैं, इसे वही जान पाएगा। इससे पता चलता है कि समझ तब पैदा होती है जब ज्ञान को सिर्फ़ बोला नहीं बल्कि जीवन में उतारा जाता है।

हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥३॥२९॥

जब वह सर्वव्यापी शक्ति अंतरात्मा में बस जाती है तब वाणी में सार्वभौमिक चेतना आ जाती है। यह अस्तित्व की अखंडता को दर्शाता है, जहाँ आंतरिक और बाहरी अभिव्यक्ति एक-दूसरे से मेल खाती हैं और सृष्टि की एकता की स्पष्टता को साथ लाती हैं। (३)(२९)

तत्त्व: भगत कबीर उस सत्य को प्रकट करते हैं जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है। शब्द इसके निकट तो पहुँच सकते हैं लेकिन वह इस आंतरिक अनुभव की जगह नहीं ले सकते। वह अस्तित्व की उस अखंडता की ओर इशारा करते हैं जहाँ आंतरिक चेतना और बाहरी अभिव्यक्ति एक-दूसरे के अनुरूप हो जाती हैं। इस अवस्था में, विचार, वाणी और आचरण, स्पष्टता के स्रोत से उत्पन्न होते हैं। यह पूर्णता उस बोध को व्यक्त करती है कि समस्त सृष्टि एक ही मूल शक्ति से ओत-प्रोत है जो उस अंतर को मिटा देती है जो भीतर महसूस होता है और जो व्यक्ति बाहर व्यक्त करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com